हिन्दी विभाग

स्नातक तृतीय (II)

पत्र संख्या – 08

नाटक और एकांकी के स्वरूप में अन्तर

1.) 'नाटक' के कई अंक हो सकते हैं, परन्तु 'एकांकी' में केवल एक ही अंक होता है।

2.) 'नाटक' में एक कथासूत्र (मुख्य कथानक) के साथ अनेक उपकथाएँ अथवा सहायक कथाएँ या घटनाएँ जुड़ी हो सकती हैं। 'एकांकी' के आरंभ से अंत तक केवल एक ही कथा का निर्वाह किया जाता है।

3.) 'नाटक' में पात्रों की संख्या पर्याप्त हो सकती है। एकांकी में कम-से-कम (कभी-कभी तो दो-तीन ही) पात्र होते हैं।

4.) 'नाटक' में पात्रों के चरित्र का विकास क्रमशः धीरे-धीरे होता है। कई बार तो किसी पात्र के चरित्र की वास्तविकता बहुत बाद में जाकर स्पष्ट हो पाती है।

जैसे – 'आधी रात का सूरज' नाटक में 'मोहन' के चरित्र की आत्मलिप्तता का पता तीसरे-चौथे दृश्य में चल जाता है। 'सुनीता' के चरित्र की विशेषताएँ भी अंत तक एक-एक करके उद्घाटित होती हैं। परन्तु 'गांधी' के एक-दो दृश्यों में ही गांधी का चरित्र स्पष्टतया प्रतिबिंबित हो जाता है।

प्रस्तुतकर्ता

बैनाथ कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय
हाजीपुर (वैशाली)
मो० नं० – 8291227109

दिनांक
30/11/2020